न्यू जीलैंड में हिंदी

श्रीमती सुनीता नारायण

न्यू जीलैंड में आज लगभग 200 भाषाएँ बोली जाती हैं। इन में से हिं दी एक है। यहाँ की औपचारिक भाषाएँ अंग्रेज़ी, ते रेओ माओरी (आदिवासियों की भाषा) और साईन लैंग्वेज (मूक-बधिर की भाषा) हैं।

अप्रवासी भारतीयों में ज़्यादातर भारतीय फिजी, भारत, यू.के, दक्षिण अफ्रीका , केन्या, तंज़ानिया आदि देशों से हैं। 2013 जनगणना के अनुसार भारतीयों की संख्या अब 66312 हो गई है। यह आंकड़ा 2006 के मुकाबले 22000 अधिक है । हिंदी अब न्यू ज़ी लैंड में चौथे स्थान पर है और ऑकलैंड शहर में तीसरे स्थान पर है, जहाँ 49518 हिंदी भाषी निवास करते हैं। आंकड़ो के अनुसार न्यू ज़ी लैंड में पैदा हुए लोगों में केवल 18.5% हिंदी बोलते हैं । यह संख्या विदेशों में पैदा हुए भारतीयों की तुलना में 30.1% से कम है जो चिंताजनक है । नीचे दिए गए रेखाचित्र से कोई भी अनुमान लगा सकता है अगर यह स्तिथि में प्रगति नहीं हुआ तो आगामी पीढ़ियों में हिंदी की ज्ञान घटती जायेगी और हमें विस्तारण में अधिक परिश्रम और धन खर्च करना पड़ेगा! बेहतर होगा की हम आज ही से मिलकर ऐसी कूटनीतियाँ बनाए जिससे बच्चे और युवा को प्रोत्साहित कर सकें।

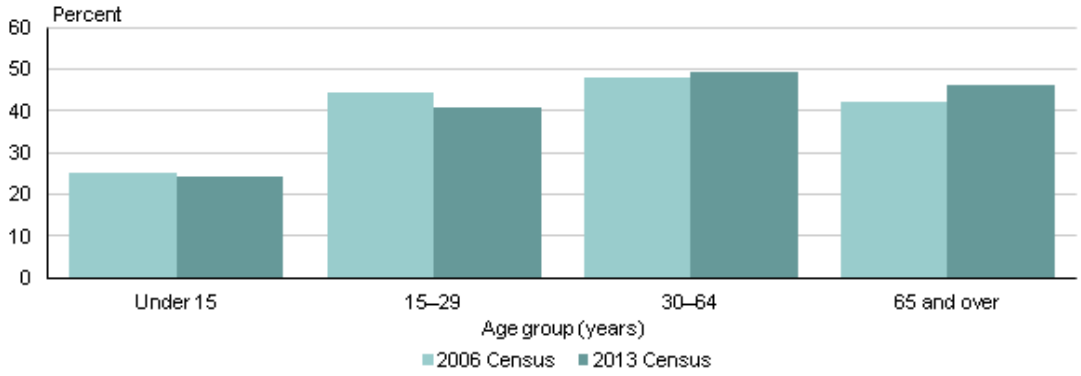

Note: Some percentages may be too small to show on graph.
Source: Statistics New Zealand

यद्दपि न्यू जीलैंड में हिंदी सुनने और अनुभव करने के अनेक सुअवसर प्राप्त हैं , हिंदी की संरक्षण में सब से महत्वपूर्ण भूमिका माता-पिता और परिवार पर ही है । बड़े-बड़े कंपनियाँ जैसे ए.एन.ज़ेड बैंक, रेडियो तराना, एशिया एन ज़ेड आदि बड़े शहरों में भारतीय त्योहारों और उत्सवों को स्पॉन्सर एवं सहायता करते हैं । इन त्योहारों में दिवाली , होली, रक्षा बंधन और ईद हैं । कई सिटी कौंसिल भी अपने शहरों में भारतीय सामाजिक संस्थाओं को उत्सव के आयोजन में मदद करते

हैं । कई वर्षों से दिवाली और ईद संसद भवन – बीहाइव, में हर साल सरकार द्वारा आयोजित किया जाता है।

भारतीय दूरदर्शन जैसे ज़ी.टी.वी. , स्टार प्लस यहाँ मिलती हैं। स्थानीय टी.वी. चैनेल्स के माध्यम से हमें अनेक तरह के प्रोग्राम और फिल्मों का आनंद प्राप्त होता है । आकाशवाणी द्वारा चौबीस घंटे कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। अंतरराष्ट्रीय हिंदी प्रोग्राम्स इंटरनेट पर भी उपलब्द हैं। परंतु कोई हिंदी अखबार नहीं है। हाल में एक नया अखबार इंडियन एक्सप्रेस शुरू हुआ है जिसमें 1-2 पन्ने हिंदी को समर्पित किया जाता है ।

कई शहरों में अब विश्व हिंदी दिवस मनाया जा रहा है। हिंदी विद्यालय अपने कार्यक्रमों में भाषा, संगीत, निबंध इत्यादि की प्रतियोगिताएँ भी करते हैं और माता-पिता को भी सम्मिलित करते हैं। सभी उस समय का अति आनंद उठाते हैं। ऑकलैंड में जहाँ भारतीयों की संख्या बड़ी मात्रा में है, वहाँ जनता के लिए और भी कार्यक्रम होते हैं जो हफ़्ते-भर चलते हैं । इस आयोजन में श्रीमान सत्या दत्त जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस साल पहली बार वेलिंग्टन के विक्टोरिया विश्वविद्यालय में भारतीय मल्टीकल्चरल क्लब द्वारा एक सप्ताह का प्रोग्राम आयोजित किया गया।

न्यू जीलैंड सरकार संविधान द्वारा अप्रवासियों को अपनी भाषा और संस्कृति बनाए रखने की अनुमती देती तो है पर कुछ ही को सहायता प्राप्त है। कोई भी भारतीय भाषा इन में नहीं हैं। ऑकलैंड में तीन सेकेंडरी विद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। लेकिन यह परीक्षा विषय नहीं है। वेलिंग्टन में एक विद्यालय लंच ऑवर में हिंदी देते हैं। पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए कम से कम 15 विद्यार्थियों का होना आवश्यक है। इस स्कूल का प्रिन्सिपल, 2015 में अपने बच्चों को हिंदी ऑप्शन देना चाहते हैं।

इन सालों में जहाँ विकास हु आ है वहीं कुछ ऐसे परिस्थितयाँ हैं जो चिंताजनक हैं। सब से पहेले तो मातृभाषा सिखाने की ज़िम्मेदारी माता-पिता का होता है। बच्चों की मातृभाषा का शिक्षण माँ और घर से शुरू होता है। पर आज यह दे खा जा रहा है कि अंग्रेज़ी को ज़्यादा महत्व दिया जा रहाहै। यह हमारा दुर्भाग्य है की हमा रा भारतीय समुदाय यह नहीं समझ पा रहा है की अपनी मातृभाषा में निपुण होने से हमारा मानसिक विकास और प्रबल होता है ।

हम अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, एक्स्ट्रा-करिकुला गतिविधियों - खेल-कूद, नृत्य-संगीत पर ज़्यादा ध्यान देने लगे हैं। इस में बहुत धन खर्च करते हैं। कई लोगों का विचार है की यह सब करने से उनका परिवार का दर्जा ऊपर हो जाता है। हिंदी शिक्षण का सवाल उठता ही नहीं। जहाँ एक तरफ गैर भारतीय हिंदी सीखना चाहते हैं वहीं दूसरी तरफ हमारे अपने युवा अपनी संस्कृति और भाषा से

मुँह मोड़ रहे हैं - हिंदी बोलने से हिचकिचाते हैं और अपना नाम भी बदल लेते हैं - कोमल से कोमाल, कृषण से कृशान, कमल से कमाल आदि। इन को हम दोषी नहीं ठहरा सकते!

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम

2007 न्यू ज़ीलैंड की राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन लाए गए थे। इसके अंतर्गत भाषा वर्ग को दो भागों में विभाजित कर दिया गया था - (1) अंग्रेज़ी और (2) अन्य सभी भाषाएँ। पाठ्यक्रम अंग्रेज़ी के माध्यम से प ढ़ाया जाता है। भाषाओं में शामिल है चीन , जेर्मन, स्पेनिश, फ्रेंच, जापानी, मावरी, कुछ प्रशांतीय भाषाएँ और संकेत भाषा।

स्कूलों में क्या पढ़ाया जा एगा इस का निर्णय स्वयं स्कूल का संचालन-मंडल करता है। एक तरफ यह स्वंत्रता है तो दूसरी तरफ पूरे साधन न होने की लाचारी। छात्र की संख्या उपयुक्त हैं तो टीचर नहीं - टीचर है तो उपयुक्त संख्या में छात्र नहीं। यह परिस्तिथि केवल हिंदी ही नहीं बल्कि और भाषाओं को झेलना पड़ रहा है।

किसी भी विश्वविद्यालय मे हिंदी नहीं पढ़ाई जाती है। आजकल न्यू ज़ीलैंड क्वालिफिकेशन्स अथॉरिटी (एन.जेड.क्यू.ए) भाषा पढ़ाने वाले टीचर्स क्वालिफिकेशन लेवेल 4-5 क्वालिफिकेशन (सर्टिफिकेट/डिप्लोमा) का निरीक्षण कर रहें है। जिसमें अनौपचारिक भाषा शिक्षकों को सम्मिलित करने की संभावना है। इसी उद्देश्य को लेकर मेसी यूनिवर्सिटी भी अपने लेवेल 6-7 (बैचलर/मास्टर्स) क्वालिफिकेशन का निरीक्षण कर रहे हैं यह हमारे लिए एक सराहनीय और बहमूल्य कदम है।

न्यू ज़ीलैण्ड में हिंदी शिक्षण

हम भारत, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि से दूर यहाँ न्यू ज़ीलैंड में भी हिंदी और भारतीय संकृति के अनुरक्षण और प्रसार में लगे हु ए हैं। यहाँ हिंदी की पढ़ाई का औपचारिक साधन तो नहीं है, फिर भी हम कई जगहों पर छोटे -छोटे स्कूल चला रहे हैं जहाँ शनिवार/रविवार को पढ़ाई होती है। लगभग पचीस वर्षों से यहाँ बहुत सारे लोग हिंदी को बढ़ावा देने और संरक्षण के लिए पढ़ाने-लिखाने में जुटे हुए हैं। उन सब का एक ही लक्ष्य है कि हमारे बच्चों और युवाओं में भारतीयता होने का और हिंदी बोल पाने का गर्व हो।

हिंदी शिक्षण में रोहित कुमार "हैप्पी" जी का योगदान महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने अपनी वेबसाइट "भारत दर्शन" पर ऑनलाइन हिंदी टीचर शुरू किया और बारीकी से पाठ तैयार कि ए जहाँ छात्र को उच्चारण विधि भी दिए गए। यह एक प्रगतिशील कदम रहा है। पाठ के अलावा वे अपनी रचनाएँ - कविता, कहानियाँ आदि भी प्रस्तुत करते हैं।

ऑकलैंड, वेलिंग्टन, हेमिल्टन, क्राइस्टचर्च आदि नगरों में कई विद्यालयों का संचालन हो रहा है। लगभग 8 पाठशालाएँ अपने -अपने ढंग से कार्यक्रम कर रहीं हैं - कई ने तो पाठ्यक्रम भी तैयार कर लिए हैं। आजकल सभी पाठशालाओं में शिक्षित अध्यापक (इन में अवकाश प्राप्त अध्यापक शामिल हैं) भी हैं। ये अध्यापक पूरे सप्ताह नौकरी करते हैं और शनिवार व रविवार को हिंदी स्कूलों में पढ़ाते हैं। कक्षा का समय 1 से 3 घंटों का होता है जहाँ भाषा , इतिहास, संस्कृति, संगीत, नृत्य आदि सिखाया जाता है। सभी विद्यालय वार्षिक समारोह करते हैं जिसमें माता-पिता, परिवार और जनता को आमंत्रित किया जाता है।

पाठशालाएँ मंदिरों , सामुदायिक केन्द्रों , घरों और क ई स्कूलों में अपनी कक्षाएँ चलाते हैं। पिछले 8-10 सालों से हिंदी शिक्षण के प्रयास में भारतीय दूतावास भी शामिल हो गए हैं और पुस्तकें भी प्रदान कर रहे हैं जिन में पाठ्य पुस्तक के साथ -साथ अन्य सामान्य पुस्तकें भी हैं। फिर भी हमें यहाँ की स्थानीय परिस्थियों को ध्यान में रखते हुए कुछ सामग्री खुद तैयार करना पड़ता है।

जैसा भी हो, सभी पाठ्यक्रम हिंदी भाषा के साथ-साथ संस्कृति और सभ्यता , इतिहास और साहित्य को प्राथमिकता देते हैं । विद्यालयों के सिद्धान्त भी हैं जो उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करता है। पाठ्यक्रमों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. हिंदी भाषा का दैनिक जीवन में प्रयोग को बढ़ावा देना
2. हिंदी भाषा साहित्य के प्रति सही सांस्कृतिक और एतिहासिक दृष्टिकोण को महत्व देना
3. हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा प्रोत्साहन
4. स्वस्थ सामाजिक परम्पराओं को गहरा करना जिससे विद्यार्थी भविष्य के शिक्षक बन सके

हाँ कुछ चुनौतियाँ भी हैं!

- कक्षा के लिए पर्याप्त जगह, माता-पिता की बढ़ती अपेक्षाएँ
- दुभाषिये और गैर भारतीय बच्चों और बड़ों को पढ़ाने की गतिविधीयाँ

- एक्स्ट्रा-करिकुला क्रियाकलापों के कारण छात्रों की अनुपस्तिथी
- विद्यालय के संचालन में धन की आवश्यकता भी पड़ती है। दान और फंड रेजिंग से हम धन प्राप्त करते हैं।
- एक ही कक्षा में बच्चों की योग्तायों में बहुत अंतर होता है जो एक अध्यापक के सामने चुनौतियाँ खड़ी कर देते हैं। फिर भी अध्यापक हार नहीं मानते।

हमारा संकल्प है की न्यू ज़ीलैंड में हिंदी को औपचारिक महानता दी जाए।

सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ

न्यू ज़ीलैंड में आजकल अनगिनत सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ हैं। कई मंदिर भी बन गए हैं जहाँ भारत से लाई गई मूर्तियाँ ने मंदिरों की शोभा में चारचंद लगा दिए हैं। यहाँ हर त्यौहार मनाया जाता है। लोग भारी संख्या में आने लगे हैं और स म्मिलित होकर पूजा-पाठ करते हैं। दिवाली, होली, राम लीला, राम नवमी, राम कथा, शिवरात्रि, श्री कृष्ण अष्टमी, दुर्गा पूजा, गणेश चतुर्थी, नव रात्रि आदि पर्व घरों में भी मनाया जाता है और जनता को भी आमंत्रित किया जाता है। उस समय लगता है कि हम फिजी या भारत में है ! हर्ष की बात है की कई मंडलियाँ बच्चों और युवाओं को भी गीत-संगीत, भजन-कीर्तन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है । निर्धारित समय पर बच्चों के लिए अभ्यास का प्रबंध भी किया जाता है। एक कमी है - न ई पीढ़ियों को हिंदी प ढ़ना नहीं आता इसलिए गाने रोमन में लिखे हुए होते हैं, जिससे सही उच्चारण में बाधाएँ आती हैं। लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ हिंदी और संस्कृति के अनुरक्षन और विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

हिन्दू कौंसिल ऑफ़ न्यू ज़ीलैं ड साल में कई सम्मलेन , सांस्कृतिक कार्यक्रमों , योग तथा त्योहारों का आयोजन कर ता है। वे सफलतापूर्वक यहाँ की माओरी जनजाति संस्कृति और सभ्यता को संपूर्ण रूप से शामिल करते हैं। यह एक अत्यंत सराहनीय कदम रहा है।

दिवाली के समय वेलिंग्टन और ऑकलैंड नगरों में धूम -धाम से दिवाली मेला लगाया जाता है। आज कल मेला एक दिन से दो हफ्तों का कार्यक्रम बन गया है। इस दौरान कई तरह की प्रदर्शनियाँ, बॉलीवुड फ़िल्में और भारतीय संस्कृति से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। बड़े-बड़े व्यवसाय घरों के प्रयोजनों से ही यह सब संभव हो पाता है। अक्टूबर-नवंबर महीनों में

इस मेले का हम इंतज़ार करने लगते है। हमें एक और सुनहरा मौका मिलता है जब हम अपनी संस्कृति को सब के साथ गर्व से बाँट सकें। गैर भारतीय लोग भी बड़े उत्तेजनापूर्वक शामिल होते हैं।

ऐसे महोत्सव, भारतीय शादियाँ और बॉलीवुड से गैर भारतीयों का परिचय हो गया है। भारतीय वेश-भूषा और खान-पान यहाँ लोकप्रिय हो रहा है। गैर भारतीय लोग भारतीय खाने को दिलचस्पी के साथ अपने आहार में शामिल कर रहे हैं। देखा जा रहा है की स्त्रियाँ भारतीय कपड़े और ज़ेवर को अपना रही हैं। शादियों में गैर भारतीय युवा लोग अक्सर भारतीय वस्त्रों – कुरता, साड़ी, लेहंगा, घागरा -चोली इत्यादि में देखने को मिलते हैं।

संचार माध्यम

हिंदी के प्रचार-प्रसार में 25 सालों से कम्युनिटी रेडियो स्टेशनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। लगभग 20 सालों से ऑकलैंड से "रेडियो तराना" चौबीस घंटे राष्ट्रीय तौर पर प्रसारित होता है । यह स्टेशन फिजी अप्रवासी रोबेर्ट खान जी द्वारा स्थापित किया गया। यह रेडियो आज दुनिया के कई जगहों पर सुना जा सकता है। फिजी से रोज़ाना जुड़ कर प्रोग्राम होता है। भारतवंशी लोगों के लिए इस माध्यम से गीत-संगीत , बॉलीवुड की खबरे , दुकानदारी, विज्ञापन, सामाजिक सूचनाएँ, मेहमानों के मुलाकातें इत्यादि प्रसारित होते हैं।

हिंदी की पत्रिकाएँ अभी तक नहीं हैं । हाँलाकि मासिक भारतीय अखबार "इंडियन न्यूज़लिंक" कई सालों से प्रकाशित हो रहा है। प्रकाशक रविन्द्र लाल जी है और संपादक एवं मुख्य रिपोर्टर वेंकट रमण जी हैं जो दुनिया भर के, खासकर भारत, फिजी और न्यू ज़ीलैंड के समाचारों को विस्तार रूप से लिखते हैं। "ग्लोबल इंडियन" और "इंडियन वीकेन्डर " ऑनलाइन अखबारें हैं। इंडियन्ज़ एक्स-प्रेस एक मात्र अखबार है जो 2-3 पन्ने हिंदी को समर्पित करता है।

ज़ी.टी.वी. अत्यंत लोकप्रिय हो गया है। आज घर-घर में स्टार प्लस चैनल है। समाचार, धार्मिक कार्यक्रम, मनोरंजन, सोप्स, बॉलीवुड फिल्में, पकवान और कई मुख्य धाराएँ प्रसारित होती हैं। बच्चे से बूढ़े तक के लिए यह माध्यम मनोरंजन के अतिरिक्त हिंदी सीखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। माओरी टी.वी. चेनल पर समय-समय पर भारतीय सांस्कृतिक प्रोग्राम और बॉलीवुड फ़िल्में देखने को मिलती हैं। बॉलीवुड फ़िल्में अत्यंत लोकप्रिय हो गई हैं। गैर भारतीय भी बॉलीवुड फिल्में देखते हैं। सिनेमा में भी लगातार फ़िल्में चलते हैं और विडियो की दुकाने पुराने से लेकर नए-नए फ़िल्मों की कापियाँ रखते हैं। बॉलीवुड डांस प्रतियोगिता ओं में अक्सर गैर भारती य

लड़कियाँ भाग लेती हैं। ओकलैंड और वेलिंग्टन में कई नृत्यशालाएँ हैं जहाँ भरतनाट्यम, मणिपुरी, कथक जैसे शास्त्रीय नृत्य सिखाया जाता है और दर्शकों के लिए प्रदर्शन भी होते हैं।

न्यू ज़ीलैंड में हिंदी का भविष्य और निवेदन (सिफ़ारिश)

हिंदी के परिवर्धन और संरक्षण के लिए हमारे कुछ सुझाव इस प्रकार हैं:

- अध्यापकों के लिए शिक्षण और प्रोत्साहित करने की सुविधाएँ।
- गैर भारतीयों और दुभाषियों को हिंदी पढ़ाने का उचित शिक्षण, साधन और प्रबंध उपलब्द हो।
- हमारे युवा विद्यार्थियों के लिए आदान-प्रदान एक्स्चंज योजनाएँ और हिंदी सम्मेलन
- दुनिया के और प्रांतों में हिंदी अधिकारीयों की नियुक्ति और सांस्कृतिक केंद्रों को खोल कर सेवियों का उत्साह बढ़ाएँ।
- पश्चिमी देशों के लिए एक सामान्य जिसे भारत के हिंदी शिक्षण संस्थाओं से स्वीकृति प्राप्त हो
- विश्व हिंदी सचिवालय का क्षेत्रिय दफ्तरों की स्थापना की जाए जो हमारे प्रयासों को प्रबल बनाए और उसके लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग प्रदान करें।
- सम्मेलन के तुरंत बाद विदेशी सरकारों को सम्मेलन के परिणाम से अवगत किया जाए और उनसे सहयोग के लिए अनुरोध किया जाए ताँकि मिलकर हिंदी शिक्षा और प्रसारण की योजनाएँ बनाई जा सके।
- सभी पक्षों की भूमिका और ज़िम्मेदारियाँ सौंपा जाए जिससे सचिवालय को सहयोग मिले।

हमारे बच्चों के हिंदी शिक्षण में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। हम माता-पिता को शिक्षित करें और आने वाले पीढ़ी को अंग्रेज़ी के साथ -साथ हिंदी भाषा में प्रवीणता हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करें और उनमें यह भावना जा गृत करें - "इट्स कूल टु बी इंडियन"! अभा षियों को भी हिंदी सीखने के लिए प्रोत्साहित करें।

भारतीय दूतावास, विश्व हिंदी सचिवालय और हिंदी विशे षज्ञों से हमारा निवेदन है कि वे विदेश मंत्रालय के हिंदी विभाग से जुड़कर हमारे प्रयासों में मदद करें - पुस्तकों के अलावा अध्यापकों का शिक्षण, पठन-पाठन की सामग्री के निर्माण में मदद करें। दुनिया के सभी प्रान्तों में हिंदी अधिकारीयों की नियुक्ति और सांस्कृतिक केंद्रों को खोलें जो हिंदी और संस्कृति के प्रसार व प्रचार में हमारी सहायता करें और सेवियों को प्रोत्साहित करें।

हम सब मिल कर अपनी मातृभाषा का अनुरक्षण और सृजन करें और मिलकर इसका दीप दुनिया भर में जलाते रहे!

जय हिंदी

References:
Narayan, S. 2010 Vishwa Hindi Patrika.
New Zealand Curriculum 2007. Ministry of Education. Wellington New Zealand
Census Report. 2013: Ethnic Group Profiles.
http://www.stats.govt.nz/Census/2013-_census/profile-and-summary-reports/ethnic profiles.aspx?request_value=24743&tabname=Languagesspoken

Acknowledgements:
Mrs Anuradha Gupta, Wellington New Zealand
Mrs Jai Chandra, Teacher. Shivacharan Trust. Auckland New Zealand
Mrs Kala Satyanand, Head Teacher. Canterbury Hindi Trust. Christchurch New Zealand
Mr Satya Datt, President, Language and Culture Trust. Auckland New Zealand

संचालिका,वेलिंग्टन हिंदी स्कूल, न्यू ज़ीलैंड
38, प्रिसिला क्रिसेंट, किन्टाल,
वेलिंगटन, न्यू ज़ीलैंड
sundev@paradise.net.nz